पाठ 34

1. सीनै पर्वत की चोटी से परमेश्वर ने इस्राएलियों को क्या दिया?

-दस धर्मादेश।

2. केवल परमेश्वर ही हमारा परमेश्वर क्यों है?

-क्योंकि एक ही ईश्वर है।

-क्योंकि कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है।

3. हमें परमेश्वर की तरह दिखने के लिए एक छवि क्यों नहीं बनानी चाहिए?

-क्योंकि ईश्वर आत्मा है।

-क्योंकि परमेश्वर किसी व्यक्ति, या जानवर, या पक्षी की तरह नहीं दिखता है।

4. हमें परमेश्वर के नाम का आदर क्यों करना चाहिए?

-क्योंकि परमेश्वर का नाम और परमेश्वर एक ही हैं।

-क्योंकि परमेश्वर का नाम और परमेश्वर एक हैं।

5. हमें सप्ताह में एक दिन आराम क्यों करना चाहिए?

-क्योंकि परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को छह दिनों में बनाया, और फिर सातवें दिन विश्राम किया।

6. हमें अपने पिता और माता का सम्मान क्यों करना चाहिए?

-क्योंकि परमेश्वर ने हमें पालने के लिए हमारे माता-पिता दिए हैं।

7. ईश्वर के अनुसार, यदि हम किसी अन्य व्यक्ति से घृणा करते हैं, तो हमने क्या किया है?

-परमेश्वर कहते हैं कि अगर हम किसी दूसरे व्यक्ति से नफरत करते हैं, तो हमने उस व्यक्ति को मार डाला है।

8. ईश्वर के अनुसार यदि हम किसी दूसरे व्यक्ति को देखें और उसके साथ सोना चाहें तो हमने क्या किया है?

-परमेश्वर कहते हैं कि अगर हम दूसरे व्यक्ति को देखते हैं और उनके साथ सोना चाहते हैं, तो हमने उनके साथ व्यभिचार किया है।

9. ईश्वर के अनुसार यदि हम किसी दूसरे व्यक्ति का सामान चुराने के बारे में सोचते हैं तो हमने क्या किया है?

-परमेश्वर कहते हैं कि अगर हम किसी दूसरे व्यक्ति का सामान चोरी करने के बारे में सोचते हैं, तो हमने उन्हें चुरा लिया है।

10. ईश्वर के अनुसार, यदि हम सत्य को जानते हैं फिर भी उसे बताने में असफल होते हैं, तो हम क्या कर रहे हैं?

-परमेश्वर कहते हैं कि जब हम सच जानते हैं फिर भी उसे बताने में असफल होते हैं, तो हम झूठ बोल रहे हैं।

11. हमें वह क्यों नहीं चाहिए जो दूसरे लोगों के पास है?

-क्योंकि खुद परमेश्वर ने दूसरों को दिया है।

12. यदि हम एक को छोड़कर परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो परमेश्वर क्या कहता है?

-परमेश्वर कहते हैं कि ऐसा लगता है कि हमने उनकी सभी आज्ञाओं की अवहेलना की थी।

13. परमेश्वर की दस आज्ञाओं को तोड़ने का दंड क्या है?

-अनन्त अग्नि की झील में मृत्यु।

14. परमेश्वर की आज्ञाएँ दर्पण के समान कैसे हैं?

-परमेश्वर की आज्ञाएं हमें हमारे पाप को देखने में मदद करती हैं।

-परमेश्वर की आज्ञाएं हमें हमारे पाप दिखाती हैं।

15. परमेश्वर ने हमें अपनी आज्ञाएँ क्यों दीं?

-हमें हमारे गंदे, पापी दिल दिखाने के लिए।

16. हमारे गंदे, पापी हृदयों को केवल कौन शुद्ध कर सकता है?

-परमेश्वर।

-क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता था कि इस्राएली उसकी दस आज्ञाओं को भूल जाएं, परमेश्वर ने उन्हें पत्थर की दो पट्टियों पर लिखा।

-परमेश्वर ने मूसा को पत्थर की दो पटिया लेने के लिए सीनै पर्वत की चोटी पर बुलाया।

आइए पढ़ें निर्गमन 24:12

12 यहोवा ने मूसा से कहा, पहाड़ पर मेरे पास आ, और यहीं रह, और मैं ने पत्यर की पटियाएं, और व्यवस्या और आज्ञाएं जो मैं ने उनकी शिक्षा के लिथे लिखी हैं, तुझे दूंगा।

-मूसा ने परमेश्वर की बात मानी, और सीनै पर्वत पर चढ़ गया।

-यहोशू नाम का एक युवक मूसा के साथ गया।

आइए पढ़ें निर्गमन 24:13-15 और 18

13 तब मूसा अपके सहयोगी यहोशू के संग कूच किया, और मूसा परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया।

14-उसने पुरनियों से कहा, जब तक हम तुम्हारे पास लौट न आएं, तब तक यहीं हमारी बाट जोहते रहो। हारून और हूर तेरे संग हैं, और जो कोई विवाद में पड़ जाए, वह उनके पास जा सकता है।"

15 जब मूसा पर्वत पर चढ़ गया, तब बादल ने उसको ढांप लिया।

18 तब मूसा पर्वत पर चढ़ते ही बादल में प्रवेश कर गया। और वह चालीस दिन और चालीस रात पहाड़ पर रहा।

-जब मूसा सीनै पर्वत की चोटी पर पहुंचा, तो परमेश्वर ने उसे अपनी दस आज्ञाएं दीं।

-जब परमेश्वर ने मूसा को अपनी दस आज्ञाएँ दीं, तो उसने मूसा को उसके लिए कुछ बनाने की आज्ञा भी दी।

-परमेश्वर ने मूसा को उसके लिए क्या बनाने की आज्ञा दी?

-परमेश्वर ने मूसा को उसके लिए एक तम्बू बनाने की आज्ञा दी।

आइए पढ़ें निर्गमन 25:8

8- यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएल से मेरे लिथे एक पवित्र स्थान बनवा, और मैं उनके बीच निवास करूंगा।

-परमेश्वर ने मूसा को उसके लिए तम्बू बनाने की आज्ञा क्यों दी?

-क्या परमेश्वर को रहने के लिए घर की जरूरत है?

-नहीं।

-परमेश्वर को रहने के लिए घर की आवश्यकता क्यों नहीं है?

-क्योंकि ईश्वर आत्मा है।

-क्योंकि परमेश्वर हर समय हर जगह हैं।

-परमेश्वर ने मूसा को उसके लिए तम्बू बनाने की आज्ञा क्यों दी?

-क्या तुम्हें वह वाचा याद है जो परमेश्वर ने इस्राएलियों के साथ की थी?

-परमेश्वर ने इस्राएलियों के साथ क्या समझौता किया था?

-यदि इस्राएलियों ने उसकी सभी आज्ञाओं का पालन किया, तो परमेश्वर ने क्या करने का वचन दिया?

-यदि इस्राएलियों ने उसकी सभी आज्ञाओं का पालन किया, तो परमेश्वर ने उन्हें आशीष देने का वचन दिया।

-यदि इस्राएलियों ने उसकी सभी आज्ञाओं का पालन नहीं किया, तो परमेश्वर ने क्या करने का वचन दिया?

-यदि इस्राएलियों ने उसकी सभी आज्ञाओं का पालन नहीं किया, तो परमेश्वर ने उन्हें दण्ड देने का वचन दिया।

-क्या इस्राएली परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम थे?

-नहीं।

-क्या परमेश्वर को पता था कि इस्राएली उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम नहीं थे?

-हां।

-अपनी एक आज्ञा को भी तोड़ने के लिए परमेश्वर की सजा क्या है?

-अनन्त अग्नि की झील में मृत्यु।

-यही कारण है कि परमेश्वर ने मूसा को उसे एक तम्बू बनाने की आज्ञा दी:

-क्योंकि परमेश्वर इस्राएलियों से प्रेम करता था, वह नहीं चाहता था कि वे अनन्त आग की झील में मरें।

-क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता था कि इस्राएली अनन्त आग की झील में मरें, परमेश्वर ने उनके लिए बचने का एक रास्ता प्रदान किया।

-इस्राएलियों के लिए परमेश्वर ने बचने का क्या मार्ग प्रदान किया?

-जब इस्राएलियों ने पाप किया और परमेश्वर की एक आज्ञा को तोड़ा, तब इस्राएली तम्बू में जाकर पशुओं का लोहू ले आते थे।

-जब वह जानवरों का खून देखेगा तो परमेश्वर क्या करेगा?

-जब परमेश्वर जानवरों के खून को देखेगा, तब तक वह इस्राएलियों को तब तक दण्ड देने से रोकेगा जब तक कि पाप का बेहतर भुगतान नहीं किया जाता।

-परमेश्वर कैसे चाहता था कि मूसा और इस्राएली तम्बू का निर्माण करें?

आइए पढ़ें निर्गमन 25:9

9-यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, "इस निवासस्थान और इसकी सारी साज-सज्जा को ठीक वैसा ही बना, जैसा मैं तुझे दिखाऊंगा।"

-परमेश्वर कैसे चाहता था कि मूसा और इस्राएली तम्बू का निर्माण करें?

-ठीक वैसा ही जैसा परमेश्वर ने कहा था।

-परमेश्वर कैसे चाहता था कि नूह नाव का निर्माण करे?

-ठीक वैसा ही जैसा परमेश्वर ने कहा था।

-जिस प्रकार परमेश्वर ने नूह को परमेश्वर के कहे अनुसार नाव बनाने की आज्ञा दी, उसी प्रकार परमेश्वर ने भी मूसा को आदेश दिया कि वह परमेश्वर के कहे अनुसार तम्बू का निर्माण करे।

-हम परमेश्वर को नहीं बता सकते कि हम उनके पास कैसे आएंगे।

-हमें परमेश्वर के पास उसी तरह से आना चाहिए जैसे वह हमें बताता है।

-हम अपने तरीके से परमेश्वर के पास नहीं आ सकते।

-हमें केवल परमेश्वर के रास्ते में परमेश्वर के पास आना चाहिए।

-हम परमेश्वर का मार्ग कहाँ से सीखते हैं?

-परमेश्वर की किताब, बाइबिल में।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को तम्बू बनाने के लिए किन सामग्रियों से आज्ञा दी थी?

-जानवरों की खाल और बकरियों के बालों से बनी सामग्री से।

-तब, परमेश्वर ने मूसा को तम्बू में दो कमरे बनाने की आज्ञा दी।

-उन दो कमरों के नाम क्या थे जिन्हें परमेश्वर ने मूसा को तम्बू में बनाने की आज्ञा दी थी?

-पवित्र कक्ष और परम पवित्र कक्ष।

-पहले कमरे को पवित्र कक्ष कहा जाता था।

-यह एक कमरा था जो परमेश्वर के लिए था।

-पहले कमरे में कुछ ही लोग घुस पाए।

-दूसरे कमरे को मोस्ट होली रूम कहा जाता था।

-यह कमरा अकेले परमेश्वर के लिए था।

-मोस्ट होली रूम में साल में सिर्फ एक बार एक ही व्यक्ति प्रवेश कर पाता था।

-ऐसा इसलिए था क्योंकि इस कमरे में परमेश्वर की महिमा होगी।

-यदि इस्राएलियों ने तम्बू को ठीक वैसा ही बनाया जैसा परमेश्वर ने मूसा से कहा था, तब परमेश्वर का तेज उस तम्बू के परमपवित्र स्थान में प्रवेश करेगा।

-तब परमेश्वर ने मूसा को परमपवित्र कक्ष में रखने के लिए एक विशेष सन्दूक बनाने की आज्ञा दी।

-विशेष सन्दूक को वाचा का सन्दूक कहा जाता था।

आइए पढ़ें निर्गमन 25:10-11

10-यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएल से बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनवा ले, जो ढाई हाथ लंबा, डेढ़ हाथ चौड़ा, और डेढ़ हाथ ऊंचा हो।

11 और उसको भीतर और बाहर चोखे सोने से मढ़वाना, और उसके चारोंओर सोने का साँचा बनाना।"

-परमेश्वर ने आदेश दिया कि वाचा का सन्दूक एक विशेष पेड़ की लकड़ी से बनाया जाना चाहिए।

-परमेश्वर ने यह भी आदेश दिया कि वाचा के सन्दूक को सोने से ढंकना चाहिए।

-परमेश्वर ने यह भी आज्ञा दी कि वाचा का सन्दूक ढाई हाथ लंबा, डेढ़ हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ ऊंचा होना चाहिए।

-फिर, परमेश्वर ने मूसा को वाचा के सन्दूक के लिए एक आवरण बनाने की आज्ञा दी।

आइए पढ़ें निर्गमन 25:17

17-यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, प्रायश्चित्त का ढाँचा चोखे सोने का बनाना, जो ढाई हाथ लम्बा और डेढ़ हाथ चौड़ा हो।

-परमेश्वर ने मूसा को वाचा के सन्दूक के लिए शुद्ध सोने का एक आवरण बनाने की आज्ञा दी।

-परमेश्वर ने यह भी आदेश दिया कि कवर ढाई हाथ लंबा और ढाई हाथ चौड़ा होना चाहिए।

-यह कवर वह होगा जहां परमेश्वर की महिमा इस्राएलियों के साथ रहेगी।

-फिर, परमेश्वर ने मूसा को कवर के लिए दो सोने के स्वर्गदूत बनाने की आज्ञा दी।

आइए पढ़ें निर्गमन 25:18-20

18-यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, "और ढकने के सिरों पर गढ़े हुए सोने से दो करूब बनवाना।

19 एक करूब एक सिरे पर और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर बनाना; करूबों के एक टुकड़े के दोनों सिरों पर ओढ़ना और करूब बनाना।

20 और करूबोंको अपके पंख ऊपर की ओर फैलाए, और उनके ऊपर से ढका सा छा जाए। वे करूबों को एक दूसरे के साम्हने ढांपे की ओर देखते रहें।"

-परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी कि वह आवरण के एक सिरे पर एक सोने का दूत और दूसरे सिरे पर दूसरा सोने का दूत बनाए।

-परमेश्वर ने आज्ञा दी कि दोनों स्वर्गदूतों को एक दूसरे का सामना करना चाहिए, उनके पंखों को ढकने के लिए फैलाया गया था, और उनके चेहरे नीचे देख रहे थे।

-फिर, परमेश्वर ने मूसा को वाचा के सन्दूक के ऊपर आवरण डालने की आज्ञा दी।

आइए पढ़ें निर्गमन 25:21-22

21-यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, "आवरण को सन्दूक के ऊपर रख, और साक्षीपत्र के सन्दूक में रख, जो मैं तुझे दूंगा।

22 वहां मैं उन दोनों करूबोंके बीच जो साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर हैं, तुम से मिलूंगा, और इस्राएलियोंके लिथे अपक्की सब आज्ञाएं तुझे दूंगा।

-परमेश्वर ने मूसा को उसकी दस आज्ञाओं की दो पटियाओं को वाचा के सन्दूक के भीतर रखने की आज्ञा दी।

-यह उन दो सोने के स्वर्गदूतों के बीच के आवरण के ऊपर होगा जहाँ परमेश्वर की महिमा इस्राएलियों के साथ रहेगी।

-परमेश्वर ने मूसा को परम पवित्र कक्ष और पवित्र कक्ष को विभाजित करने के लिए एक पर्दा लटकाने की भी आज्ञा दी।

आइए पढ़ें निर्गमन 26:31 और 33

31-यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, "नीले, बैंजनी और लाल रंग के धागों, और महीन मुड़े हुए मलमल का एक परदा बनाओ, जिस में करूब किसी कुशल कारीगर से गढ़े हुए हों।

33-परदे को अकड़न में से लटका देना, और साक्षीपत्र के सन्दूक को परदे के पीछे रखना। परदा पवित्र स्थान को परमपवित्र स्थान से अलग कर देगा।"

-परम पवित्र कक्ष और पवित्र कक्ष को विभाजित करने के लिए पर्दे का क्या अर्थ था?

-पर्दा इस्राएलियों को यह सिखाने के लिए था कि वे पाप के कारण परमेश्वर से अलग हो गए हैं।

-जिस तरह परदे ने परम पवित्र कक्ष और पवित्र कक्ष को अलग कर दिया, वैसे ही पाप ईश्वर और लोगों को अलग कर देता है।

-जब परदा समाप्त हो गया, तब परमेश्वर ने मूसा को वाचा के सन्दूक को परमपवित्र स्थान में रखने की आज्ञा दी।

-परमेश्वर ने मूसा को तम्बू के चारों ओर बाड़ बनाने की भी आज्ञा दी।

-बाड़ के अंदर और तम्बू के सामने, परमेश्वर ने मूसा को कांसे से ढकी लकड़ी की एक वेदी बनाने की आज्ञा दी।

आइए पढ़ें निर्गमन 27:1-2

1 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, तीन हाथ ऊंचे बबूल की लकड़ी की वेदी बनाना; वह चौकोर, पाँच हाथ लम्बा और पाँच हाथ चौड़ा हो।

2 और चारों कोनों में से एक एक सींग बनाओ, कि वे सींग और वेदी एक ही टुकड़े के हों, और वेदी को पीतल से मढ़वाओ।"

-जब एक इस्राएली ने पाप किया, तो परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा दी कि वे पीतल की वेदी पर बलि किए जाने के लिए एक पशु लाएँ।

-यहाँ बताया गया है कि परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए पशु वध करने के लिए कैसे कहा:

आइए लैव्यव्यवस्था 1:4 पढ़ें

4 यहोवा ने मूसा से कहा, वह अपके हाथ होमबलि के सिर पर रखे, और वह उसके लिथे ग्रहण किया जाए, कि उसके लिथे प्रायश्चित्त करे।

-परमेश्वर ने आज्ञा दी कि इस्राएली अपना हाथ पशु के सिर पर रखे, और फिर पशु को बलि करे।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को उस जानवर के सिर पर हाथ रखने की आज्ञा क्यों दी जिसे वे वध करेंगे?

-इस्राएली ने जानवर के सिर पर हाथ रखकर परमेश्वर को स्वीकार किया कि उसने पाप किया है और मर जाना चाहिए, लेकिन यह कि परमेश्वर जानवर की मौत को स्वीकार करेगा, न कि उसकी मौत।

-क्या जानवरों का खून इस्राएलियों के पापों का भुगतान करने में सक्षम था?

-नहीं।

-तो फिर परमेश्वर इस्राएलियों को उनके पापों के लिए एक जानवर का वध करने के लिए क्यों कह रहा था?

-परमेश्वर इस्राएलियों को सिखा रहे थे कि पाप की सजा मृत्यु है।

-जब वह जानवरों का खून देखेगा तो परमेश्वर क्या करेगा?

-जब परमेश्वर जानवरों के खून को देखेगा, तब तक वह इस्राएलियों को तब तक दंडित करना बंद कर देगा जब तक कि खून का बेहतर भुगतान नहीं किया जाता।

तब परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी कि वह उसके भाई हारून को प्रधान याजक बनाए।

-परमेश्वर ने मूसा को हारून के पुत्रों को याजक बनाने की भी आज्ञा दी।

आइए पढ़ें निर्गमन 28:1

1 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, कि अपके भाई हारून को अपके पुत्रोंनादाब, अबीहू, एलीआजर और ईतामार समेत इस्राएलियोंमें से तेरे पास ले आए, कि वे मेरे लिथे याजक का काम करें।

-परमेश्वर ने हारून और उसके पुत्रों को याजक बनाया।

-परन्तु मुख्य याजक हारून को ही परमपवित्र स्थान में जाने दिया गया।

-और हारून को वर्ष में केवल एक बार परमपवित्र कक्ष में प्रवेश करने की अनुमति दी गई थी।

-क्योंकि परमेश्वर पवित्र हैं और सभी पापों से नफरत करते हैं, मुख्य पुजारी साल में केवल एक बार परम पवित्र कक्ष में प्रवेश करने में सक्षम थे।

आइए पढ़ें लैव्यव्यवस्था 16:2

2 यहोवा ने मूसा से कहा, अपके भाई हारून से कह, कि जब कभी वह परमपवित्र स्थान में चाहे तो सन्दूक के प्रायश्चित्त के ढकने के साम्हने परदे के पीछे वाले परमपवित्र स्थान में न आए, नहीं तो वह मर जाएगा, क्योंकि मैं बादल के ऊपर दिखाई देता हूं। प्रायश्चित आवरण।"

-क्या होगा यदि हारून जब चाहे परम पवित्र कक्ष में प्रवेश करे?

-हारून मर जाएगा।

-हारून वर्ष में केवल एक बार परम पवित्र कक्ष में प्रवेश कर पाता था जिस दिन परमेश्वर ने उसे चुना था।

-जब वह दिन आया जब परमेश्वर ने हारून को परम पवित्र कक्ष में प्रवेश करने के लिए चुना, तो परमेश्वर ने हारून को अपने साथ क्या ले जाने की आज्ञा दी?

आइए पढ़ें लैव्यव्यवस्था 16:14

3 यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, वह बछड़े के लोहू में से कुछ लेकर अपक्की उँगली से प्रायश्चित्त के ढकने के आगे के भाग पर छिड़के; तब वह उस में से कुछ को प्रायश्चित्त के ढकने के साम्हने अपनी उँगली से सात बार छिड़के।"

-परमेश्वर ने हारून को एक जानवर के खून को परम पवित्र कक्ष में ले जाने की आज्ञा दी।

-हारून का जानवर के खून से क्या लेना-देना था?

-उसे वाचा के सन्दूक के ऊपर लहू छिड़कना था।

-क्योंकि परमेश्वर पवित्र है और सभी पापों से घृणा करता है, मुख्य पुजारी को जानवरों के खून को परम पवित्र कक्ष में ले जाना था और रक्त को वाचा के सन्दूक पर छिड़कना था।

-यदि हारून ने परमेश्वर की बात मानी, और वाचा के सन्दूक पर लहू छिड़का, तो परमेश्वर क्या करेगा?

-जब तक पाप का बेहतर भुगतान नहीं किया जाता तब तक परमेश्वर इस्राएलियों के पापों की सजा को एक और वर्ष के लिए रोक देगा।

-हम परमेश्वर को नहीं बता सकते कि हम उनके पास कैसे आएंगे।

-हमें परमेश्वर के पास उसी तरह से आना चाहिए जैसे वह हमें बताता है।

-हम अपने तरीके से परमेश्वर के पास नहीं आ सकते।

-हमें केवल परमेश्वर के रास्ते में परमेश्वर के पास आना चाहिए।